UNIVERSITY OF RAJASTHAN
JAIPUR

SYLLABUS

3/4 Yrs. Undergraduate Programme in B.A. Sanskrit

III & IV -Semester

Session - 2024-25

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.– संस्कृत वर्ष 2024–25

कार्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत साहित्य के अध्ययन करने से विद्यार्थी की साहित्य के प्रति रूचि होगी। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम VI सेमेस्टर में विभाजित किया गया हैं जिसमें प्रत्येक सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री का अपना महत्त्व है। संस्कृत साहित्य के सतत अध्ययन से भारतीय संस्कृति एवं धर्म से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान उसे प्राप्त होगा जिसकी युवा वर्ग को महती आवश्यकता है। संस्कृत साहित्य में निहित दर्शन एवं अध्यात्म का ज्ञान भी वह इसी प्रोग्राम से प्राप्त कर सकेगा। विश्व विख्यात पुस्तक गीता के अध्ययन से उसके जीवन की समस्याओं से भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है क्योंकि गीता मनोवैज्ञानिक विषय का भी ग्रन्थ है जो पाठक को अहंकार और अवसाद से मुक्त करने में समर्थ है। भाषा का मूल एवं विश्व का वैज्ञानिक ग्रन्थ पाणिनी की अष्टाध्यायी (लघुसिद्धान्तकौमुदी) के अध्ययन से वह व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर शब्दोत्पत्ति एवं शब्द निर्माण का ज्ञान कर सकेगा। वैदिक वाङ्मय के साथ–साथ उपनिषदीय तत्त्वों का अध्ययन इसमें निहित है। भारतीय दर्शन का परिचय हो सकेगा, मनुस्मृति व याज्ञवल्क्य स्मृति से अध्ययन से प्राचीन ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थी में ब्रह्मचर्य के गुणों का विकास होगा जो वर्तमान में नितान्त आवश्यक है। प्राचीन धर्म दर्शन के अध्ययन से वर्तमान में विद्यार्थियों में निरन्तर बढ़ रही हीन भावनाओं का निराकरण होगा। क्योंकि इस प्रोग्राम में प्रवेश लेकर वे स्वयं को श्रेष्ठ स्नातक के रूप में तैयार करेंगे।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद / निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
III-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
III-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
IV-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
IV-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2024–25
तृतीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
Paper Code- UG9111-SAN-63T 251
वैदिक साहित्य

समयः 3घण्टे अंकः 120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य- स्नातक स्तर में संस्कृत पढ़ने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर तृतीय सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें वैदिक ज्ञान से जुड़े विषयों का समावेश किया गया है। वेद मंत्रों के अध्ययन से मन से सम्बन्धित विकारों का निदान होगा जो कि वर्तमान काल में अत्यन्त आवश्यक है।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
III-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
III-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
IV-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
IV-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

अंकों का योग

पाठ्यवस्तु

Unit-I 30

1– ऋग्वेद (7 सूक्त (अग्नि 1/1, वरुण 1/26, इन्द्र 2/12, क्षेत्रपति

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

2/157, विश्वदेवा – 8/58, प्रजापति 10/121, संज्ञान 10/191)
व्याख्या, अनुवाद एवं देवस्वरूप

Unit-II 30

2– अथर्ववेद (भूमिसूक्त)

Unit-III 30

3– तैतिरीयोपनिषद् (शिक्षावल्ली)
4– बृहदारण्यकोपनिषद् (तृतीय अध्याय)

Unit-IV 30

5– मुण्डकोपनिषद्
6– कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय – तीनों वल्ली)

योग **120**

अंक–विभाजन

पाठ्यवस्तु	लघूत्तरात्मक प्रश्न	अंक	'निबन्धात्मक/व्याख्यात्मक प्रश्न	अंक	अंकों का योग
ऋग्वेद	03(लघूत्तरात्मक)	06	2 अ 2 ब	24	14+10=24
अथर्ववेद	03(लघूत्तरात्मक)	06	3 अ 3 ब	24	14+10=24
तैतरीयोपनिषद् (शिक्षा वल्ली) बृहदाण्यकोपनिषद्	01(लघूत्तरात्मक) 01(लघूत्तरात्मक)	04	4 अ 4 ब	26	(8+5)=13 (8+5)=13
मुण्डकोपनिषद् कठोपनिषद्	01(लघूत्तरात्मक) 01(लघूत्तरात्मक)	04	5 अ 5 ब	26	(8+5)=13 (8+5)=13
	1 (10)	**20**	**04**	**100**	**120 अंक**

प्रश्न–पत्र निर्माता के लिए अनुदेश

1– ऋग्वेद	3 लघूत्तरात्मक प्रश्न प्रष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	06 अंक
	प्र. 2 (अ) 4 में से 2 व्याख्याएँ पृष्टव्य हैं, प्रति व्याख्या 07 अंक निर्धारित है। (ब) दो में से एक देवस्वरूप सम्बन्धी प्रश्न पृष्टव्य है।	14 अंक 10 अंक
2 अथर्ववेद	3 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	06 अंक
	प्र. 2 (अ) 4 में से 2 व्याख्याएँ पृष्टव्य हैं, प्रति व्याख्या 07 अंक निर्धारित है। (ब) दो में से एक देवस्वरूप सम्बन्धी प्रश्न पृष्टव्य है।	14 अंक 10 अंक
3–तैतिरीयोपनिषद् (शिक्षा वल्ली)	1 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	02 अंक
	प्र0 3 (अ–1) 2 में से 1 व्याख्या पृष्टव्य हैं।	08 अंक
	(अ–2) 2 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	05 अंक
बृहदारण्यकोपनिषद्	1 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	02 अंक
	(ब–1) 2 में से 1 व्याख्या पृष्टव्य हैं।	08 अंक
	(ब–2) 2 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	05 अंक
4– मुण्डकोपनिषद्	1 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	02 अंक
	प्र0 3 (अ–1) 2 में से 1 व्याख्या पृष्टव्य हैं।	08 अंक
	(अ–2) 2 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	05 अंक
कठोपनिषद्	1 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	02 अंक
	(ब–1) 2 में से 1 व्याख्या पृष्टव्य हैं।	08 अंक
	(ब–2) 2 विवेचनात्मक प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	05 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

		120 अंक

सहायक पुस्तकें –

1– वैदिकसूक्त मुक्तावली – डॉ. सुधीरकुमार गुप्त व डॉ. युगलकिशोर मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयापुर
2– वैदिकसूक्त कुसुमांजलि – डॉ. लम्बोदर मिश्र
3– वेदभारती – डॉ. सुधीर कुमार गुप्त, जयपुर
4– ईशादि0 उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर
5– वैदिक साहित्य और संस्कृति – बलदेव उपाध्याय
6– वैदिक साहित्य – रामगोविन्द त्रिवेदी
7– वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ. राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
8– वैदिक स्वरबोध – ब्रजबिहारी चौबे।

पाठ्यक्रम परिणाम - स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय में पाठ्यक्रम विस्तृत होने से एवं तृतीय सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र से विद्यार्थी को विषय के विस्तृत ज्ञान का अवसर प्राप्त होगा। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से संस्कृत विषय में वैदिक साहित्य विशेष रूप से उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन संबंधी विषयों में समृद्धता से विद्यार्थी का परिचय होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी में मानवीय गुणों का विकास होगा जो वर्तमान संक्रमित काल में अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी को वैदिक एवं औपनिषदिक वाङ्मय को जानने–समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। वर्तमान भौतिकवादी युग के अशान्त जीवन में विद्यार्थी को आत्मिक शान्ति के स्वरूप को जानने तथा सदाचारी मानव के रूप में प्रवृत्त होने का अवसर प्राप्त होगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2024–25
तृतीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
Paper Code- UG9111-SAN-63T 252
भारतीय दर्शन

समयः 3घण्टे अंकः 120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत पढ़ने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर तृतीय सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र में 3 यूनिट हैं। इस प्रश्नपत्र में भारतीय दर्शन व उसके अंतर्गत आने वाले योग एवं वैशेषिक दर्शन को पाठ्यक्रम में रखा गया है। इसमें भारतीय दर्शन में निहित जीवन मूल्यों तथा विशेषकर योगसूत्र के माध्यम से योगदर्शन का अध्ययन करवाया जाएगा। जो कि वर्तमान भौतिकयुगीन समाज में व्याप्त रोगों एवं कुरीतियों का निराकरण कर समाज में स्वास्थ्य एवं संस्कार की स्थापना का बीज बिन्दु होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
III-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
III-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
IV-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
IV-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

पाठ्यवस्तु **अंकों का योग**

Unit-I 40

योगसूत्रम्

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Unit-II 40
तर्कसंग्रह
Unit-III 40
भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय
योग **120**

अंक–विभाजन

पाठ्यवस्तु	लघूत्तरात्मक प्रश्न	अंक	'निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न	अंक	अंकों का योग
योगसूत्रम्	03(लघूत्तरात्मक)	06	2 अ 2 ब	34	24+10=34
तर्कसंग्रह	03(लघूत्तरात्मक)	06	3 अ 3 ब	34	24+10=34
भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय	04(लघूत्तरात्मक)	08	4 5	32	16+16=32
	1 (10)	**20**	**04**	**100**	**120**

प्रश्नपत्र निर्माता के लिए निर्देश

1– योगसूत्रम्	3 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	06 अंक
	प्रश्न 2 (अ) 6 सूत्रों में से 3 सूत्रों की व्याख्या पृष्टव्य है, प्रति व्याख्या 8 अंक निर्धारित है।	24 अंक
	प्रश्न सं. 2 (ब) में से एक विवेचनात्मक प्रश्न पृष्टव्य है।	10 अंक
2– तर्कसंग्रह	3 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	06 अंक
	प्रश्न 3 (अ) 6 में से 3 व्याख्या पृष्टव्य है, प्रति व्याख्या 8 अंक निर्धारित है।	24 अंक
	प्रश्न 3 (ब) में से एक विवेचनात्मक प्रश्न पृष्टव्य है।	10 अंक
3– भारतीय दर्शन	04 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	08 अंक
	प्रश्न सं. 4 – 4 में से 2 प्रश्न पृष्टव्य है।	16 अंक
	प्रश्न सं. 5 – 4 में से 2 प्रश्न पृष्टव्य है।	16 अंक
		120 अंक

सहायक ग्रन्थ

1– भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, हिन्दी समिति, इलाहाबाद
2– भारतीय दर्शन – बलदेवउपाध्याय – चौखम्बा, वाराणसी
3– भारतीय दर्शन की रूपरेखा – डॉ. हिरयन्ना
4– भारतीय दर्शन – डॉ. बाबूलाल त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5– भारतीय दर्शन – सरल विवेचन – डॉ. राजकिशोर सिंह, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6– एन इण्ट्रोडक्शन टू इण्डियन फिलासफी – दत्त एंड चटर्जी
7– दर्शनशास्त्र का इतिहास – पं. बलदेव शर्मा एवं शंकरप्रसाद शुक्ल, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर
8– योगसूत्रम् – व्याख्याकार डॉ. अमलधारी सिंह
9– तर्कसंग्रह – व्याख्याकार डॉ. दयानन्द भार्गव

पाठ्यक्रम के परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम से योगसूत्र व तर्कसंग्रहीय अध्ययन के साथ–साथ विद्यार्थी भारतीय दर्शन के गहन रहस्यों को

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

जानने में सक्षम होगा। योग की परम्परा के माध्यम से विद्यार्थी में आने वाले विकारों का निराकरण होगा। जिसकी वर्तमान समाज में नितान्त महती आवश्यकता है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत अध्ययन करवाये जाने वाले विषयों का समुचित ज्ञान प्राप्त कर वर्तमान की आवश्यकता सदाचारी एवं स्वस्थ जीवन की परिकल्पना को साकार कर सकेगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2024–25
चतुर्थ सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
Paper Code- UG9111-SAN-64T 253
संस्कृत साहित्य का इतिहास, धर्मशास्त्र एवं द्रुतपाठ

समयः 3घण्टे अंकः 120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत विषय के अंतर्गत विद्यार्थी संस्कृत भाषा और उसके प्राचीनतम साहित्य से परिचित हो सकेगा। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें धर्मशास्त्र, गीता एवं संस्कृत साहित्य का विद्यार्थी अध्ययन करेगा। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी पुरातन सत्य सनातन संस्कृति में विद्यमान धर्मशास्त्रीय व्यवस्था के अंतर्गत वर्णाश्रम धर्म, सदाचार, संस्कार आदि का अध्ययन कर सकेगा। साथ ही संस्कृत साहित्य के इतिहास के अंतर्गत उसको प्राचीन वैदिक वाङ्मय, महाकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नीतिकाव्य आदि के स्वरूप को जानने का अवसर प्राप्त होगा तथा श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से उसे कर्त्तव्यबोध का ज्ञान होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
III-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
III-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
IV-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
IV-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Unit-I

याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय– 1 से 8 प्रकरण) 30 अंक

Unit-II 30 अंक

मनुस्मृति (अध्याय 2)

Unit-III 30 अंक

श्रीमद्भगवद्गीता (2 व 3 अध्याय)

Unit-IV 30 अंक

संस्कृत साहित्य का इतिहास – वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथों का सामान्य परिचय, रामायण, महाभारत, महाकाव्य एवं काव्य, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक साहित्य, ऐतिहासिक महाकाव्य एवं नीतिकाव्य

योग **120**

अंक–विभाजन

पाठ्यवस्तु	**लघूत्तरात्मक प्रश्न**	**अंक**	**'निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न**	**अंक**	**अंकों का योग**
1– याज्ञवल्क्यस्मृति	02(लघु)	04	2 अ 2 ब	26	16+10=26
2– मनुस्मृति	02(लघु)	04	3 अ 3 ब	26	16+10=26
3– श्रीमद्भगवद्गीता	02(लघु.)	04	4 अ 4 ब	26	16+10=26
4– संस्कृत साहित्य का इतिहास	04(लघु.)	08	5 अ 5 ब	22	(7+7)+8=22
	1(10)	20	04	100	**120 अंक**

प्रश्नपत्र निर्माता के लिए अनुदेश

1– याज्ञवल्क्यस्मृति	2 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	04 अंक
	प्रश्न 2(अ) – 4 में से 2 व्याख्या पृष्टव्य है। प्रति व्याख्या 8 अंक निर्धारित है।	16 अंक
	प्रश्न सं. 2 (ब) – 2 में से एक प्रश्न पृष्टव्य है।	10 अंक
2– मनुस्मृति	2 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	04 अंक
	प्रश्न 3(अ) – 4 में से 2 व्याख्या पृष्टव्य है। प्रति व्याख्या 8 अंक निर्धारित है।	16 अंक
	प्रश्न सं. 3 (ब) – 2 में से एक प्रश्न पृष्टव्य है।	10 अंक
3– श्रीमद्भगवद्गीता (2 व 3 अध्याय)	2 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	04 अंक
	प्रश्न 4(अ) – 4 में से 2 व्याख्या पृष्टव्य है। प्रति व्याख्या 8 अंक निर्धारित है।	16 अंक
	प्रश्न सं. 4 (ब) – 2 में से एक प्रश्न पृष्टव्य है।	10 अंक
4– संस्कृत साहित्य का इतिहास	4 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न	08 अंक
	प्रश्न सं. 5 (अ) वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथों का सामान्य परिचय संबंधी 2 प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है। रामायण, महाभारत संबंधी 2 प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	07 अंक 07 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

	प्रश्न सं. 5 (ब) महाकाव्य एवं काव्य, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक साहित्य, ऐतिहासिक महाकाव्य एवं नीतिकाव्य संबंधी 2 प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है।	08 अंक
		120 अंक

सहायक पुस्तकें –

1– याज्ञवल्क्यस्मृति (आचाराध्याय), सं. डॉ. कृष्णचन्द्र शर्मा, अजमेरा बुक कं., जयपुर
2– याज्ञवल्क्यस्मृति, निर्णय सागर प्रेस, बंबई
3– मनुस्मृतिय – श्री हरगोविन्द शास्त्री
4– भगवद्गीता – गीताप्रेस, गोरखपुर
5– भगवद्गीता (2,3,4 अध्याय) डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर

संस्कृत साहित्य का इतिहास

1– संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं नानूराम व्यास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2– संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास – डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, अजमेरा बुक कं., जयपुर
3– संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद
4– संस्कृत साहित्य का इतिहास – श्री सत्यनारायण शास्त्री, आर्य बुक डिपो, दिल्ली
5– संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6– संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
7– संस्कृत साहित्य का इतिहास – ए.बी. कीथ, अनु. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8– संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
9– संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. राजवंश सहाय 'हीरा', चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
10– संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली

पाठ्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम विद्यार्थी को विषय के विस्तृत ज्ञान का अवसर मिलेगा। संस्कृत विषय में वैदिक साहित्य विशेष रूप से उपनिषद तथा भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य का इतिहास, धर्मशास्त्र सम्बन्धी विषयों की समृद्धता से विद्यार्थी का परिचय होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी में मानवीय गुणों का विकास होगा जो वर्तमान संक्रमित काल में अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी वैदिक साहित्य के साथ–साथ लौकिक साहित्य के स्वरूप से परिचित होगा। उसके द्वारा भारतीय धर्म दर्शन के गूढ़ रहस्यों को जानकर अपने जीवन में अंगीकृत करने की प्रवृत्ति का विकास होगा तथा वह समाज का मार्ग प्रशस्त करने का आधार बनेगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2024–25
चतुर्थ सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
Paper Code- UG9111-SAN-64T 254
व्याकरण, निबन्ध व अनुवाद

समयः 3घण्टे अंकः 120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत पढ़ने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर चतुर्थ सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 3 यूनिट हैं। जिसमें व्याकरण, निबंध एवं अनुवाद का अध्ययन करवाया जाएगा। व्याकरण अध्ययन से शब्द रूप की मूल उत्पत्ति का ज्ञान होने से विद्यार्थी के शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी एवं संस्कृत व्याकरण में विद्यमान वैज्ञानिकता से उसका परिचय होगा। इस प्रश्नपत्र में व्याकरण के अध्ययन को समाहित किया गया है जो कि संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए अत्यावश्यक है। व्याकरण अध्ययन से ही विद्यार्थी शुद्ध लेखन व उच्चारण करने में समर्थ होगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में निबंध लेखन एवं अनुवाद को स्थान दिया गया है।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40% होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
III-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
III-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
IV-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
IV-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Unit-I

व्याकारण–लघुसिद्धान्तकौमुदी — 40 अंक

नामिक हलन्त प्रकरण

विश्ववाह् , चतुर् , विद्वस् , राजन् , पथिन् , मघवन् , अस्मद् , युष्मद् , इदम्

Unit-II

व्याकारण–लघुसिद्धान्तकौमुदी तिङन्त – भू धातु समस्त लकारों में तथा समस्त गणों की प्रथम धातु एवं एध् धातु की लट् , लृट्, लोट्, लिंड् एवं लंड् लकारों में रूपसिद्धि — 40 अंक

Unit-III

निबन्ध (संस्कृत में) एवं अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत) — 40 अंक

कुल योग — **120 अंक**

अंक विभाजन –

पाठ्य वस्तु	**लघूत्तरात्मक प्रश्न**	**अंक**	**'निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न**	**अंक**	**अंकों का योग**
लघुसिद्धान्तकौमुदी– नामिक हलन्त प्रकरण	05 (लघु.)	10	2 अ 2 ब	30	12+12+6 = 30
लघुसिद्धान्तकौमुदी – तिङन्त प्रकरण	05 (लघु.)	10	3 अ 3 ब	30	12+12+6 = 30
निबन्ध (संस्कृत में) एवं अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत)	–	–	4 5	40	20 + 20 = 40
	1(10)	**20**	**06**	**100**	**120 अंक**

प्रश्नपत्र निर्माता के लिए निर्देश

नामिक हलन्त प्रकरण	5 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न निर्धारित है।	10 अंक
	2 (अ) 6 में से 3 सूत्र की सोदाहरण व्याख्या	12 अंक
	2 (ब) 6 शब्दरूप सिद्धियों में से 3 सिद्धि पृष्टव्य हैं।	12 अंक
	विभक्ति एवं वचन संबंधी 6 शब्दरूपों में से 3 शब्दरूप पृष्टव्य है।	06 अंक
तिङन्त	5 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है – 2 अंक प्रति प्रश्न निर्धारित है।	10 अंक
	3 (अ) 6 में से 3 सूत्र की सोदाहरण व्याख्या	12 अंक
	3 (ब) 6 धातुरूप सिद्धियों में से 3 सिद्धि पृष्टव्य हैं।	12 अंक
	पुरुष एवं वचन संबंधी 6 धातुरूपों में से 3 धातुरूप पृष्टव्य है।	06 अंक
निबन्ध (संस्कृत में) एवं अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत)	प्रश्न 4 – चार विषय देकर किसी एक विषय पर निबन्ध पृष्टव्य है।	20 अंक
	प्रश्न 5 – 15 हिंदी वाक्यों में से 10 वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद अपेक्षित हैं।	20 अंक
		120 अंक

सहायक पुस्तकें

1– लघुसिद्धान्तकौमुदी – पं. हरेकान्त मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली

2– लघुसिद्धान्तकौमुदी – टी. महेशसिंह कुशवाहा

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

3– लघुसिद्धान्तकौमुदी – भैमी टीका – भीमसेन शास्त्री, चौखम्बा, वाराणसी
4– लघुसिद्धान्तकौमुदी – सुधा संस्कृत टीका, चौखम्बा, वाराणसी
5– संस्कृत व्याकरण – डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6– लघुसिद्धान्तकौमुदी–डॉ अर्कनाथ चौधरी, आयुर्वेद हिन्दी संस्कृत पुस्तक भण्डार, .जयपुर
7– अनुवादकला – वासुदेव शास्त्री, चौखम्बा, वाराणसी
8– रचनानुवाद प्रभा – डॉ. श्रीनिवास शास्त्री
9– अनुवादचन्द्रिका – चक्रधर हंस नौटियाल
10– प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी – डॉ. कपिल द्विवेदी
11– नवीन अनुवाद चन्द्रिका, डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी, चौखम्बा, वाराणसी
12– संस्कृत निबन्धांजलि – डॉ. रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
13– संस्कृत निबन्धादर्श – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, साहित्य निकेतन, कानपुर
14– ज्ञान संस्कृत निबन्ध – डॉ. प्रेमचन्द चमोली– ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
15– प्रबन्धामृतम् – श्री नवलकिशोर कांकर, विद्या वैभवम्, जयपुर
16– संस्कृत निबन्धकुंजम् – डॉ. वासुदेव कृष्ण चतुर्वेदी, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
17– संस्कृत निबन्ध नवनीतम्– डॉ. द्विवेदी एवं चतुर्वेदी, श्रीराम मेहरा एंड कं, आगरा

पाठ्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र में व्याकरण अध्ययन को प्रमुख विषय के रूप में रखा गया है। जो कि विद्यार्थी को संस्कृत भाषा के स्वरूप को समझने का अवसर प्रदान करेगा। व्याकरण एवं निबन्ध सम्बन्धी विषयों की समृद्धता से विद्यार्थी का परिचय होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी में मानवीय गुणों का विकास होगा जो वर्तमान संक्रमित काल में अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त होगा जो कि सभी भाषाओं की जननी है। विद्यार्थी में समाज के प्रति संवेदना जाग्रत होगी। उसके भाषा कौशल में वृद्धि होगी। संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है, अतः संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर विद्यार्थी वर्तमान में कम्प्यूटर ज्ञान के क्षेत्र में अपना श्रेष्ठ स्थान बना सकता है। जिससे उसे रोजगार प्राप्त होगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR